

Dr. Priti Ranjan

H.O.D history department

H. D jain college, ara

Notes for ug semester v

हूण वंश का संक्षिप्त वर्णन करें।

1. हूणों का मूल और परिचय

हूण मूलतः **मध्य एशिया (Central Asia)** की **तुर्क-मंगोल नस्ल** की एक भटकती हुई जाति थी। इनका मूल निवास स्थान **कास्पियन सागर और यूराल पर्वत के बीच का क्षेत्र** था। वे अत्यंत युद्धप्रिय, घोड़े पर सवार होकर लड़ने वाले, और क्रूर स्वभाव के लोग थे। इनका प्रमुख उद्देश्य लूटपाट और नए प्रदेशों पर अधिकार जमाना था।

पश्चिम की ओर जाकर हूणों ने **यूरोप में हंगरी** में "हुन" नाम से साम्राज्य स्थापित किया, वहीं पूर्व दिशा में गए हूणों को **श्वेत हूण (White Huns)** या **एप्थालाइट्स (Hephthalites)** कहा गया, जिन्होंने **भारत पर आक्रमण** किया।

2. भारत पर हूणों के आक्रमण

भारत में उस समय **गुप्त साम्राज्य** अपने उत्तरकाल में था। गुप्तों की शक्ति धीरे-धीरे कम हो रही थी, और इस अवसर का लाभ उठाकर हूणों ने भारत पर हमला किया।

(क) प्रथम आक्रमण (लगभग 458 ई.)

पहला आक्रमण **स्कंदगुप्त** के समय हुआ।

स्कंदगुप्त ने बड़ी वीरता से हूणों को पराजित किया और उत्तर-पश्चिम से उन्हें खदेड़ दिया। लेकिन लगातार युद्धों से गुप्त साम्राज्य की शक्ति काफी कमजोर हो गई।

(ख) दूसरा आक्रमण

गुप्तों की शक्ति के क्षीण होने के बाद हूणों ने फिर से आक्रमण किया।
इस बार उनके नेता थे –

1. तोरणमाण (Toramana)
2. मिहिरकुल (Mihirakula)

◆ 3. प्रमुख हूण शासक

① तोरणमाण (Toramana)

- इसने लगभग 490 ई. में भारत पर अधिकार किया।
- इसने मालवा, राजस्थान, पंजाब, ग्वालियर और उत्तर भारत के बड़े हिस्से पर शासन किया।
- तोरणमाण की प्रशंसा एरण (मध्य प्रदेश) के एक अभिलेख में की गई है, जो सिद्ध करता है कि वह भारत में एक शक्तिशाली शासक बन गया था।
- किंतु उसके शासनकाल में भी हूणों की सत्ता स्थायी नहीं थी।

② मिहिरकुल (Mihirakula)

- यह तोरणमाण का पुत्र था।
- यह अपने अत्याचारों और बौद्ध धर्म के प्रति घोर विरोध के लिए प्रसिद्ध है।
- उसने कश्मीर और गांधार पर शासन किया और बौद्धों के मठों को नष्ट किया।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग (Hiuen Tsang) ने लिखा है कि मिहिरकुल अत्यंत निर्दयी था और उसने अनेक बौद्ध भिक्षुओं का वध करवाया।
- उसका मुख्य केंद्र सियालकोट (पंजाब) था।

4. हूणों का पतन

हूणों की सत्ता भारत में बहुत लंबे समय तक नहीं चल सकी।
उनके विरुद्ध दो शक्तिशाली भारतीय नायकों ने संग्राम किया –

1. मालवा के राजा यशोधर्मन (मांडसौर के शासक)
2. गुप्त वंश का नरसिंहगुप्त बलादित्य

इन दोनों ने मिलकर लगभग 528 ई. में मिहिरकुल को पराजित किया।
इसके बाद हूणों की शक्ति पूरी तरह समाप्त हो गई और वे भारत की संस्कृति में धीरे-धीरे विलीन हो गए।

5. हूणों का प्रभाव

हालाँकि हूणों का शासन अल्पकालीन था, परंतु उनका भारत पर कुछ महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा –

1. राजनीतिक प्रभाव:

- हूणों के आक्रमण से गुप्त साम्राज्य का पतन तेज़ हुआ।
- भारत में कई छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ।

2. सांस्कृतिक प्रभाव:

- हूण आरंभ में असभ्य थे, पर धीरे-धीरे भारतीय संस्कृति में घुल-मिल गए।
- उन्होंने हिंदू धर्म अपना लिया और भारतीय समाज का हिस्सा बन गए।

3. सैन्य प्रभाव:

- उनके आगमन से भारतीय सेनाओं में घुड़सवार और धनुर्धारी सैनिकों का प्रयोग बढ़ा।
- उन्होंने उत्तर भारत के सैन्य संगठन को एक नया रूप दिया।

6. निष्कर्ष

हूण वंश भारत में विदेशी आक्रांताओं में से एक प्रमुख था, जिसने कुछ समय के लिए उत्तर भारत पर शासन किया।

लेकिन भारतीय संस्कृति की विशालता के सामने उनकी सत्ता टिक नहीं सकी।

उनके आक्रमण से गुप्त साम्राज्य का पतन तो हुआ, किंतु अंततः हूण भारतीय समाज में समाहित हो गए और इतिहास के पृष्ठों में विलीन हो गए।